Research Ambition ISSN: 2456-0146
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer - reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.researchambition.com Email: publish2017@gmail.com
Vol. 4, Issue-IV
Feb. 2020

भारत में महिला शिक्षा की समस्याः एक समाज शास्त्रीय विमर्श

डॉ राकेश कुमार
नेट, पीएच.डी., उच्चतर माध्यमिक शिक्षक, बी0 के0 डी0 ब्वायज हाईस्कूल, जिला स्कूल, दरभंगा

संक्षिप्त रूपः

विश्वव्यापीकरण एवं भूमंडलीकरण के इस दौर में भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं में शिक्षा की समस्या एक गम्भीर चिन्ता का विषय है। स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) के लगभग 61 वर्ष व्यतीत हो जाने के बावजूद भी महिलाओं में शिक्षा एवं साक्षरता की स्थिति दयनीय है। हाँलाकि सरकारी, गैर–सरकारी एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा महिलाओं में शिक्षा की समस्या को दूर करने हेतु संवैधानिक प्रावधानो, समितियों का गठन तथा शिक्षा सम्बन्धी नीतियाँ एवं कई कार्यक्रमों आदि कई प्रकार के सराहनीय कदम उठाये गये हैं। इसके बावजूद महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति बेहतर सम्भव नहीं हो पायी है जितनी सरकार एवं जनता का अपेक्षाएँ थी। जनगणना 2001 के अनुसार देश में महिला साक्षरता–दर मात्र 54.16 प्रतिशत है जबकि पुरूष की साक्षरता–दर 75.85 प्रतिशत यानी पुरूष व महिला के बीच 21.69 प्रतिशत का अन्तर है। इससे स्पष्ट होता है कि आज भी पुरूष एवं महिलाओं के बीच लैंगिक असमानता कम नहीं हुई है। अगर राज्यानुसार महिला साक्षरता–दर का आकलन करें तो उत्तर भारत के हिन्दी भाषा–भाषी राज्यों यथा बिहार (33.37 प्रतिशत), झारखण्ड (39.38 प्रतिशत), उत्तर प्रदेश (42.98 प्रतिशत), उड़ीसा (59.97 प्रतिशत), मध्यप्रदेश (50.28 प्रतिशत) आदि का साक्षरता–दर अधिक खराब है, जबकि दक्षिण भारत के राज्यों यथा केरल (87.80 प्रतिशत), मिजोरम (86.13 प्रतिशत) आदि राज्यों की स्थिति बेहतर है। इस प्रकार, शिक्षा की स्थिति में क्षेत्रीय असमानता अभी भी व्याप्त है। देश में व्याप्त निर्धनता, महिलाओं की निम्न सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक अवसरों की असमानता, दोषपूर्ण प्रशासन आदि ऐसे कई कारण हैं जो महिला शिक्षा को व्यापक बनाने में बाधा पहुँचाते हैं। फलस्वरूप शिक्षा के अभाव में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ यथा निम्न स्वास्थ्य स्तर, निम्न जीवन स्तर, पुरूषों पर अधिक निर्भरता, अन्य सामाजिक–आर्थिक समस्याएँ आदि उत्पन्न होती रही है। अतः महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति को बेहतर बनाने हेतु परिवार, समाज और सरकार को एक साथ मिलकर दृढ़ता से प्रयास करने की सख्त आवश्यकता है ताकि महिलाएँ परिवार, समाज और राष्ट्र में अपनी स्थिति को बेहतर बना सके; क्योंकि महिला शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ परिवार एवं समाज की कल्पना सम्भव नहीं है।

शब्द कुंजीः विश्वव्यापीकरण, भूमंडलीकरण, विकासशील, महिला शिक्षा, लैंगिक असमानता, साक्षरता–दर, महिलाओं की स्थिति आदि।

भूमिका

यह एक निर्विवाद सत्य है कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र या समाज की प्राणवायु, उसकी प्रेरणा और ऊर्जा है। राष्ट्र का भविष्य उसके द्वारा हासिल किये गये शैक्षणिक स्तर पर निर्भर करता है। शिक्षा और साक्षरता दो अलग

चीजें हैं। जहाँ साक्षरता का अर्थ अक्षरों को बोलने, समझने या लिखने तक ही सममित है, वहीं शिक्षा का अर्थ कहीं अधिक व्यापक है। साक्षरता अगर अक्षर ज्ञान से सम्बन्धित है तो शिक्षा विचारों को समझने, उन्हें ग्रहण करने या आत्मसात् करने का नाम है। इसलिए एडमण्ड वर्क ने कहा कि किसी भी राष्ट्र को सबसे बड़ी सुरक्षा उसकी शिक्षा है। किसी भी देश के लिए स्त्री शक्ति का विशेष महत्व है।[1]

स्त्री स्वयं एक शक्ति ही नहीं, एक जननी भी है, पर उस नवजात शिशु की माँ की गोद बच्चे की पहली पाठशाला होती है। माँ की गोद में मिली शिक्षा ही किसी भी समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक है। महिला केवल एक माँ ही नहीं, बल्कि एक पथ–प्रदर्शक भी है, जिसमें नेतृत्व की अपार क्षमता देखने को मिली है।[2] हमारे देश में भी आरम्भ से ही महिलाओं की भूमिका रही है। वैदिक काल में भारत में महिला शिक्षा उन्नत अवस्था में थी। इस काल में महिलाओं को पुरूषों की भाँति ही शिक्षा प्राप्त करने और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। ब्रिटिश काल में प्रारम्भ में महिलाओं की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में लार्ड कर्जन (1902) ने देश में महिलाओं की शिक्षा की प्रगति में काफी योगदान दिया। श्रीमति ऐनी बेसेंट (1904) ने बनारस में सेंट्रल हिन्दू बालिका विद्यालय की स्थापना की। राष्ट्रीय महिला परिषद् (1925) का भी आयोजन भी किया। इन प्रयासों से महिला शिक्षा को काफी बल मिला। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) के बाद देश में महिलाओं में शिक्षा के प्रचार–प्रसार की ओर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया।

देश के संविधान के प्रारम्भ में यह व्यवस्था की गयी कि राज्य के किसी भी नागरिक के विरूद्ध जाति, प्रजाति, धर्म, लिंग अथवा किसी भी आधार पर विभेद नहीं करेगा इससे महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के समान रूप से अवसर उपलब्ध तो होने लगे। इसके बावजूद आज भी पुरूषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता–दर निम्न है। फलस्वरूप महिला शक्ति में छुपी क्षमताओं का उपयोग हम राष्ट्र–निर्माण में पूरी तरह से नहीं कर पा रहे है। जनगणना 2001 के अनुसार भारत में साक्षरता–दर 65.38 प्रतिशत ही है जिसमें पुरूष साक्षरता–दर 75.85 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता–दर 54.16 प्रतिशत है। इस जनगणना में पुरूष व महिला के बीच 21.69 प्रतिशत का अन्तर है। इससे स्पष्ट होता है कि साक्षरता की दृष्टि से देश में लिंगीय असमानता अभी भी व्याप्त है।

शिक्षा सामाजिक सशक्तिकरण के लिए पहला और मूलभूमत साधन है। अब यह माना जाने लगा है कि शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भूमिका दर्ज करा सकती है।[3]

शिक्षित महिला न केवल स्वयं लाभान्वित होती है; बल्कि उससे भावी पीढ़ी भी लाभान्वित होती है। शिक्षा किसी भी प्रकार के कौशल की प्राप्ति एवं विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के विकास के लिए पूर्णतया आवश्यक है। महिला की शिक्षा से उसका शोषण रोकने में मदद मिलेगी। निर्णय लेने की क्षमता से धनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध है। शिक्षा द्वारा स्त्रियों के विभिन्न विषयों; जैसे– राजनीति, धर्म, समाज, आर्थिक एवं स्वास्थ्य पक्षों में आनेवाले परिवर्तनों, कुशलता का निम्न स्तर तथा श्रम बाजार में न्यून भागीदारी। महिलाओं की वास्तविक स्थिति से परिवार, समाज एवं राष्ट्र की सामाजिक–आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है तथा सामाजिक परिवर्तन को अंजाम देने में शिक्षा एक अभिकरण या साधन के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।[4]

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्यों में प्रमुख उद्देश्य है– महिला में शिक्षा की कौन–कौन सी समस्या है तथा महिलाओं में निम्न शिक्षा के क्या कारण है, का विश्लेषण करना। इसके साथ ही महिलाओं में शिक्षा की समस्या को दूर करने हेतु प्रमुख सरकारी प्रयासों का विश्लेषण करना तथा अन्त में प्रमाणिक साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत करना शामिल है।

अध्ययन पद्धति

अध्ययन के अन्तर्गत मुख्यतः द्वितीयक श्रोत से प्राप्त आँकड़ों का ही उपयोग किया गया है। उसमें जनगणना 2001, रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, इसके साथ ही विभिन्न जर्नल, शोध–पत्र, संदर्भ पुस्तकें आदि का भी सहारा लिया गया है। इन सभी तथ्यों एवं आँकड़ों को एकत्र करने के लिए ए0 एन0 सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना, खुदा बक्श, पटना तथा पटना विश्वविद्यालय, पटना के पुस्तकालयों का सहारा लिया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण

वर्तमान समय में महिलाओं में साक्षरता–दर निम्न है। स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) के 61 वर्ष गुजर जाने के बावजूद यहाँ महिला साक्षरता–दर की स्थिति काफी निम्न है। अगर लिंगीय आधार पर महिला साक्षरता–दर का अध्ययन करें तो यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं की साक्षरता–दर पुरूषों की तुलना में कम है जो एक चिन्ता एवं चिन्तन का विषय है। हालाँकि सरकार ने विभिन्न पंचवर्षाय योजनाओं के उत्थान हेतु विशेष प्रावधान किये हैं। देश में महिला साक्षरता–दर की स्थिति को अग्र तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका सं0–1 भारत में साक्षरता–दर की स्थिति (प्रतिशत में)[5]

वर्ष	कुल	पुरूष	महिला	सक्षरता दर में अन्तर
1951	18.33	27.16	8.6	18.30
1961	28.30	40.40	15.35	25.05
1971	45.45	45.96	21.97	23.99
1981	43.57	56.38	29.76	26.62
1991	52.21	64.13	39.29	24.84
2001	65.38	75.85	54.16	21.69

श्रोत : सेन्सस ऑफ इण्डिया, 1991 एण्ड 2001, प्रोविजनल पॉप्यूलेशन टोटल्स, पेपर–1, रजिस्ट्रार एण्ड सेन्सस कमिशनर, इण्डिया, पृ0–114

तालिका से स्पष्ट है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी पुरूष और स्त्री साक्षरता–दर में अधिक अंतर पाया जाता है। वर्ष 1951 में 8.86 प्रतिशत महिलाएँ ही साक्षर थीं जो जनगणना 2001 में साक्षरता–दर 54.16 प्रतिशत तक पहुँच गयी, लेकिन पुरूषों की तुलना में यह अभी भी 21.69 प्रतिशत कम है। सुखद पहलू यह है कि साक्षरता में लिंगीय अन्तर 1981 से निरन्तर कम हो रहा है।

वर्ष 1981 में पुरूषों तथा स्त्रियों की साक्षरता–दर के मध्य 26.62 प्रतिशत का अन्तर था जो 4.93 प्रतिशत कम होकर वर्ष 2001 में 21.69 प्रतिशत ही रह गया। वैसे तो पुरूषों व स्त्रियों दोनों की साक्षरता–दर में अपेक्षाकृत

अधिक वृद्धि हुई है। पुरूषों की साक्षरता–दर 1991 में 64.13 प्रतिशत थी जो कि 2001 में बढ़कर 75.3 प्रतिशत हो गयी। इसकी तुलना में स्त्रियों की साक्षरता–दर ने पहली बार 50 प्रतिशत का आँकड़ा पार किया।

महिला शिक्षा के संदर्भ में ध्यान देने योग्य बात यह है कि अशिक्षित महिलाओं की संख्या 1991 में 200.07 मिलियन थी जो गिरकर 2001 में 189.6 मिलियन हो गयी, फिर भी यह संख्या काफी अधिक है। यह सब सरकार की सकारात्मक नीतियों का प्रतिफल है जिनके अन्तर्गत लड़कियों के लिए अधिक–से–अधिक विद्यालय खोले गये हैं इसके अलावा देश में समाज की बदलती विचारधारा व सामाजिक आर्थिक आवश्यकताओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

भारत के विभिन्न प्रमुख राज्यों में साक्षरता–दर का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि अभी भी विकसित राज्यों की तुलना में अविकसित राज्यों की महिलाओं का साक्षरता–दर में काफी असमानताएँ हैं। इसे अग्र तालिका में प्रदर्शित किया गया है :

तलिका सं0–2: भारत के राज्यों में महिला साक्षरता–दर और लिंगीय अन्तर (प्रतिशत में)[6]

राज्य/क्षेत्र	कुल	पुरूष	स्त्री	स्त्री–पुरूष में अन्तर
केरल	90.92	94.20	87.80	6.34
मिजोरम	88.49	90.69	86.13	4.56
लक्षद्वीप	87.52	93.15	81.56	11.59
गोवा	82.32	88.88	75.29	13.59
दिल्ली	81.82	87.37	75.00	12.37
महाराष्ट्र	77.27	86.27	67.51	18.76
हिमाचल	77.13	86.47	65.41	16.06
तमिलनाडु	73.47	82.33	64.51	17.78
गुजरात	69.47	80.50	58.60	21.90
पंजाब	69.95	75.63	63.55	12.08
पं0 बंगाल	69.22.	77.58	60.22	17.36
हरियाणा	68.59	79.25	56.31	22.94
कर्नाटक	67.04	76.24	57.45	18.84
मध्यप्रदेश	64.11	76.80	50.28	26.52
उड़ीसा	63.61	75.95	50.97	24.98
आंध्रप्रदेश	61.11	70.85	51.17	19.68
उत्तर प्रदेश	57.36	70.23	42.98	27.25
झाारखण्ड	54.13	67.94	39.38	28.56
बिहार	47.53	60.32	33.57	26.75
भारत	65.38	75.85	54.15	21.69

श्रोत : सेन्सस ऑफ इण्डिया, 2001, प्रोविजनल पॉप्यूलेशन टेबुल, सीरीज–1, रजिस्ट्रार जनरल एण्ड सेन्सस कमिशनर, इण्डिया, पृ0–123, 124।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि विकसित राज्यों की तुलना में अविकसित राज्यों में महिला साक्षरता–दर की स्थिति ज्यादा खराब है। आँकड़े यही दर्शाते हैं कि पाँच राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों यथा केरल, मिजोरम, लक्षद्वीप, चण्डीगढ़ और गोवा की स्थिति महिला साक्षरता के मामले में सबसे अच्छी है और उन्हें उच्च स्थान प्राप्त है क्योंकि इनमें 75 से 88 प्रतिशत तक महिलाएँ साक्षर हैं। साक्षरता–दर में लिंगीय अन्तर भी इन पाँच

राज्यों में तुलनात्मक रूप से बहुत कम (4.0 प्रतिशत से 14.0 प्रतिशत के मध्य) है, लेकिन इसके विपरीत 11 राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों यथा छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, राजस्थान, अरूणाचलप्रदेश, दादरा व नगर हवेली, उत्तरप्रदेश, जम्मू कश्मीर, झाारखण्ड और बिहार की स्थिति सर्वाधिक चिन्तनीय हैः क्योंकि इनमें महिला साक्षरता भारतीय औसत (54.15 प्रतिशत) से काफी कम है। (हाँलांकि इन सभी राज्यों में पिछले दशक में उल्लेखनीय सुधार हुआ है) यह भी उल्लेखनीय है कि इन सभी राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में लिंगीय अन्तर भी बहुत अधिक (18 प्रतिशत से लेकर 33 प्रतिशत के मध्य) है। लिंगीय अन्तर की दृष्टि से तो बिहार, उत्तरांचल, हरियाणा, कर्नाटक एवं महाराष्ट्र राज्यों की स्थिति काफी खराब है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जाति की साक्षरता–दर 54.69 प्रतिशत और अनुसूचित जनजाति की साक्षरता–दर 47.10 प्रतिशत थी जो कि भारत की कुल साक्षरता–दर 64.84 प्रतिशत से काफी कम है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति की साक्षरता–दर तो और भी सोचनीय है। कुछ बड़े राज्यों की अनुसूचित जाति की महिलाओं की साक्षरता–दर 21 प्रतिशत है जबकि बिहार मे 15.58 प्रतिशत, झारखण्ड में 22.55 प्रतिशत, उत्तरप्रदेश में 30.50 प्रतिशत और राजस्थान में 33.87 प्रतिशत है। बिहार के अनुसूचित जनजाति की महिला साक्षरता–दर तो मात्र 15.54 प्रतिशत है।

छेश में जहाँ तक विद्यालय छोड़ने की दर का सवाल है तो लड़कों की तरह ही लड़कियाँ में विद्यालय छोडने की दर में काफी कमी हुई है। लेकिन, आज भी लड़कियों में विद्यालय छोड़ने की दर लड़कों से काफी अधिक है। साथ ही तालिका से यह भी ंस्पष्ट है कि पुरूष तथा महिला दोनो में ही दोनों स्तरों (प्राथमिक तथा मिडिल) पर लड़कों के विद्यालय छोड़ने की दर में कमी करने में लड़कों की तुलना में लड़कियों ने बहुत अच्दी प्रगति की है। इन तथ्यों की पुष्टि के लिए मानव संसाधन विकास विभाग द्वारा जारी आँकड़ों को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है :

तलिका सं0–3ः बालिकाओं में विद्यालय छोड़ने की दर (1980–81 से 1999–2000)[7]

वर्ष	कुल लडके	बलिकाओं के विद्यालय छोड़ने की दर में स्त्री–पुरूष अन्तर	लड़कों के विद्यालय छोड़ने की दर में स्त्री–पुरूष अन्तर	कुल अन्तर
1980–81 (प्राथमिक)	58.7	62.5	56.2	6.3
(मिडिल)	72.7	79.4	68.0	11.4
1990–91 (प्राथमिक)	42.6	46.0	40.1	6.1
(मिडिल)	50.9	65.1	59.1	6.0
1999–2000 (प्राथमिक)	40.3	42.3	38.7	3.6
(मिडिल)	54.6	58.0	52.0	6.0
1980–81 और (प्राथमिक)	58.7–40.3	62.5–42.3	56.2–38.7	6.2–3.5
(मिडिल)	72.7–54.6	79.4–58.0	68.0–52.0	11.4–6.0
1999–2000 के बीच गिरावट	= 18.4	= 20.2	= 17.5	= 2.7
	= 18.1	= 21.4	= 16.0	= 5.4

श्रोत : शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, कुरूक्षेत्र, 2006, पृ0–27

तलिका से स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तर पर लड़कों में विद्यालय छोड़ने की दर वर्ष 1980–81 में 56.2 प्रतिशत थी जो वर्ष 1999–2000 में 38.7 प्रतिशत ही रह गयी। इस तरह इस अवधि (1980–81 से 1999–2000) में लड़कों में विद्यालय छोड़ने की दर में 17.5 प्रतिशत की कमी आई। वहीं दूसरी ओर लड़कियों में विद्यालय छोड़ने की दर 1980–81 में 62.2 प्रतिशत थी जो 1999–2000 में 42.3 प्रतिशत ही रह गई। इस तरह इस अवधि में विद्यालय छोड़ने की दर में 20.2 प्रतिशत की कमी आयी। हालाँकि लड़कियों में विद्यालय छोड़ने की दर में लड़कों से अधिक कमी आई है। लेकिन लिंगीय अन्तर आज भी काफी ऊँचा बना हुआ है। वर्ष 1980–81, 1990–99 तथा 1999–2000 में प्रथामिक स्तर पर लडकियों में विद्यालय छोड़ने की दर लड़कों से क्रमशः 62.5 प्रतिशत, 5.9 प्रतिशत, 3.6 प्रतिशत अधिक थी, लगभग इसी प्रकार की प्रवृत्तियाँ मिडिल स्तर पर दृष्टव्य होती हैं।

तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि विद्यालय छोड़ने की दर में कमी आने का आशय यह है कि महिलाओं की विद्यालय में दाखिल रहने की दरों में बढोत्तरी हो रही है। यह बात मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के शिक्षा विभाग के आँकडों से पुष्ट हो जाती है। प्राथमिक और मिडिल दोनों स्तरों पर बालिकाओं के लिए सकल नामांकन अनुपात प्राथमिक स्तर के सम्बन्ध में 1980–81 ई0 में 64.1 प्रतिशत से बढ़कर 1999–2000 में 85.2 प्रतिशत हो गया। इस अवधि के दौरान मिडिल स्तर के सम्बन्ध में यह 28.6 प्रतिशत से बढ़कर 49.7 प्रतिशत हो गया। वर्ष 1980–81 और 1999–2000 के बीच लड़कियों द्वारा की गई प्रगति (प्राथमिक और मिडिल स्तरों पर क्रमशः 8.3 प्रतिशत और 12.9 प्रतिशत) की तुलना में काफी अच्छी थी। लेकिन इसके बावजूद उच्च लिंगीय अन्तर अभी भी बना हुआ है। सन् 1999–2000 में प्राथमिक स्तर पर लड़कियों का सकल नामांकन अनुपात लड़कों से 18.9 प्रतिशत कम है और मिडिल स्तर पर 17.5 प्रतिशत कम है।

उच्चतर शिक्षा (जिसमें कॉलेज, विश्वविद्यालय, अभियांत्रिकी, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी के व्यवसायिक कॉलेज आदि शामिल है) के अवलोकन करने के बाद पाया गया कि नामांकित महिलाओं की संख्या 1990–91 के 1.32 मिलियन से बढ़कर 1999–2000 में 3.03 मिलियन हो गयी; लेकिन देश की विशाल महिला आबादी (न् 2001 ई0 में देश की 102.70 करोड़ की आबादी में महिलाओं की संख्या 48.3 प्रतिशत यानि 495.7 मिलियन थी) के मद्देनजर यह संख्या अत्यन्त कम है। लेकिन सुखद पहलू की बात यह है कि कुल नामांकन में महिलाओं के नामांकन का प्रतिशत काफी उन्नत हुआ है और लिंगीय अन्तर काफी कम हुआ है। 1990–91 में कुल नामांकन में महिलाओं का नामांकन 33.3 प्रतिशत था जो 1999–2000 में 6.8 प्रतिशत से बढ़कर 39.8 प्रतिशत तक पहुँच गया। 1990–91 में कुल नामांकन में महिलाओं का नामांकन पुरूषों के नामांकन से 34.0 प्रतिशत कम था। 1999–2000 में यह अन्तर मात्र 20.4 प्रतिशत रह गया। इस प्रकार तुलनात्मक आँकड़ों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि लगभग सभी शैक्षणिक स्तरों पर बालिकाओं का नामांकन बालकों से कम है।

महिला शिक्षा की समस्याएँ

भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति के विशलेषण से यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आज भी शिक्षा में उच्च लिंगीय अन्तर बना हुआ है और शिक्षा के मामले में लड़कियाँ, लड़कों से काफी पीछे हैं। हालांकि यह लिंगीय अन्तर पहले से काफी कम हुआ है। शिक्षा में उच्च लैंगिक अन्तर बने रहने के कारण निर्धनता है।[8] देश में काफी परिवार गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रहे है। योजना आयोग के

अनुसार देश में 26.1 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रही है। गरीबी की स्थिति में परिवार शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते। इसके साथ–ही–साथ सामाजिक–सांस्कृतिक विसंगतियाँ और सामाजिक कुरीतियाँ आदि का बने रहना भी काफी हद तक जिम्मेवार है।[9]

निष्कर्ष

इस कारण भी महिलाएँ शिक्षा व्यवस्था से जुड़ नहीं पाती और जुड़ती भी हैं जो दो चार जमात के बाद बीच में ही पढ़ाई छोड़ देती है। लोगों की परम्परागत व रूढ़िवादी मानसिकता महिला शिक्षा को गैर–जरूरी मानता है। चूँकि भारतीय समाज का स्वरूप ही पितृसत्तात्मक है। लोग लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना आवश्यक नहीं समझते हैं; क्योंकि पुरूष प्रधान मानसिकता वाले परिवार में आज भी यह धारणा बनी हुई है कि लड़कियाँ पराया धन होती है इसलिए उनकी शिक्षा पर खर्च करना लाभहीन होगा। लड़कियों पर घरेलू दायित्वों का बोझ, बाल–विवाह, अधिक शिक्षित होने पर अधिक दहेज, शिक्षा के लिए लड़कियों को घर से दूर जाने पर सुरक्षा आदि कई कारण उन्हें पढ़ाने के प्रति अभिभावकों को हतोत्साहित करते है। आज भी बहुत से मुस्लिम परिवारों में और कई अंधविश्वासी, रूढ़िवादी हिन्दू परिवारों में लड़कियाँ पर्दा–प्रथा और बंदिशों के रहते पढ़ ही नहीं पाती या शिक्षा के उच्च स्तरों तक पहुँच ही नहीं पाती है। यद्यपि सभी शैक्षिक स्तरों पर लैंगिक असमानता आज भी विद्यमान है परन्तु स्त्रियों की स्वयं की साक्षरता–दर व शैक्षिक स्तर में हुई प्रगति को उत्साहजनक माना जा सकता है। महिला शिक्षा का समुचित विकास न होने का एक मुख्य कारण प्रशासन का अभाव है।

संदर्भ सूची–

1. मालवीय, राजीव, शिक्षा दर्शन एवं समाजशस्त्रीय पृष्ठभूमि, 2006, पृ0–195।
2. बौद्ध कमल प्रसाद, नारी शिक्षा के विविध आयाम, बुद्ध मिशन ऑफ इंडिया, पटना 2008, पृ0 –32, 33।
3. नेशनल फैमिली हेलथ सर्वे–3 (2005–06), इंटरनेशनल इंस्टीच्यूट फॉर पॉप्यूलेशन साइन्सेज, मुम्बई, 2007, पृ0–498।
4. गुप्ता, सरोज कुमार, भारतीय नारी : कल आज और कल, प्रकाशन संस्थान 2007, नई दिल्ली।
5. सेन्सस ऑफ इण्डिया, 1991 एण्ड 2001, प्रोविजनल पाप्यूलेशन टोटल्स, पेपर–1, रजिस्ट्रार जनरल एण्ड सेन्सस कमिश्नर, इण्डिया, पृ0–114।
6. वही।
7. कुरूक्षेत्र, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 2006, पृ0–27।
8. ओझा, ए0 एन0 भारत की सामाजिक समस्याएँ, कॉनिकल पब्लि0 प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 2007, पृ0–415, 418।
9. दोषी, एस0एल0, एण्ड पी0सी0 जैन– भारतीय समाज, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2003, पृ0–377।

****